फरवरी 2018

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

7 बाँटा सुख दुगुना सुख ही, बाँटा दु:ख आधा ही....

विशेष स्तम्भ

8 समसामयिक सामान्य ज्ञान
14 आर्थिक परिदृश्य
20 राष्ट्रीय परिदृश्य
25 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
31 क्रीड़ा जगत्
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 अनुप्रेरक युवा प्रतिभा
37 सारभूत तत्व कोष
42 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

लेख

47 आर्थिक लेख—समसामयिक आर्थिक गतिविधियाँ
48 समसामयिक लेख—कैटालोनिया संघर्ष
50 पर्यावरण लेख—अम्लीय वर्षा : वायु प्रदूषण का एक प्रभावी आयाम
51 चिकित्सा-विज्ञान लेख—जैविक घड़ी : स्वस्थ जीवन का पर्याय
52 कॅरियर लेख— (i) साक्षात्कार में सफल कैसे हों ?
54 (ii) बिहार पुलिस अवर निरीक्षक चयन परीक्षा, 2017

हल प्रश्न-पत्र

59 छत्तीसगढ़ प्री. डी.एल.एड. परीक्षा, 2017
65 रेलवे भर्ती बोर्ड गैर-तकनीकी (एनटीपीसी) परीक्षा, 2016
73 मध्य प्रदेश पुलिस आरक्षक भर्ती परीक्षा, 2017
80 सीमा सुरक्षा बल प्रधान आरक्षक (रेडियो ऑपरेटर) परीक्षा, 2017
87 बिहार जिला/सैन्य पुलिस सिपाही भर्ती परीक्षा, 2017
92 हरियाणा एस.एस.सी. फूड इंस्पेक्टर परीक्षा, 2015
97 उत्तराखण्ड सड़क परिवहन संविदा परिचालक भर्ती परीक्षा, 2017
102 बिहार शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2017
108 मध्य प्रदेश औषधि निरीक्षक भर्ती परीक्षा, 2017
118 इलाहाबाद उच्च न्यायालय ग्रुप-'सी' परीक्षा, 2017

विविध/सामान्य

125 सामान्य जानकारी—विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अनुसंधान तथा विकास के बढ़ते चरण—एक दृष्टि में
128 ज्ञान वृद्धि कीजिए

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

बाँटा सुख दुगुना सुख ही, बाँटा दुःख आधा ही...

✍ साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

"Shared joy is a double joy; shared sorrow is half sorrow."
— Swedish Proverb

यूँ तो आज तक हमने यही सुना है कि जो बांटोगे वह बढ़ेगा, किन्तु आज एक और नया सूत्र सीखिएगा–

बाँटा सुख दुगुना सुख ही,
बाँटा दुःख आधा दुःख ही....।।

अगर सुख बाँटोगे, तो सुख बढ़ेगा किन्तु दुःख बाँटते ही दुःख घट जाएगा, किन्तु सुख बाँटना हो या दुःख, बाँटने की कला अवश्य सीख लेनी चाहिए. सुख बाँटना बहुत आसान है, किन्तु अक्सर सुख के क्षणों में अधिकांश लोगों को घमण्ड छू जाता है और तब हम अपने सुखों को बाँटते नहीं, बल्कि उनका प्रदर्शन करना चालू कर देते हैं. हम अपने सुखों से दूसरों की तुलना (Compare) करना चालू कर देते हैं. खुद को श्रेष्ठतर मानने लगते हैं, सौभाग्यशाली मानते हैं और अन्यों को उपदेश झाड़ने लगते हैं, उनको कहते हैं कि तुम इतने सालों से मेहनत कर रहे हो, तुमने क्या पाया अब तक ? मुझे देखो, मैंने इतने कम समय में कितनी तरक्की कर ली है, अगर तुम भी मेरी तरह अपनी ईमानदारी से काम करते तो आज मुझसे अधिक धनी हो जाते. पर तुम लोग आलसी ही बने रहे. तुम्हें कुछ नहीं आता. इतने समय में भी कुछ हासिल नहीं कर पाए. तब आपके ये दंभपूर्ण वचन किसी अन्य के भीतर हीनता के भावों को जन्म देते हैं. उनमें आपके प्रति ईर्ष्या व विरोध जगा देते हैं. कदाचित् वैर-विरोध का भाव तीव्र आवेश बनकर बाहर फूटता है, तो वह आपके सुखों को जला डालता है. आपके सौभाग्य को हर लेता है और इस प्रकार सुख बाँटने की बजाय आप सुखों का अहं पाल कर नए दुःखों का एवं द्वेष का निर्माण भी कर सकते हो.

प्राप्त सुखों में उदार होना, विशाल हृदय वाला होना बहुत बड़ी बात है. आज तक जितने भी हम तीर्थ क्षेत्र देखते हैं, बड़े-बड़े आविष्कार देखते हैं, ये सब कला-कृतियाँ देखते हैं, ये सब उन महत् सोच व उदार हृदय लोगों का योगदान (Contribution) ही तो है, जिन्होंने अपने सुख में, अपने सौभाग्य में सबको साझीदार बनाया. ये कुछ लोग इस धरती का शृंगार है, भूमि-भूषण है, जो औरों को मुस्कराते देखना पसंद करते हैं, इसलिए सदा मुस्कराहट फैलाते हैं, प्रेम फैलाते हैं. किसी ने कहा भी है कि–

''सुख बाँटो सुख बढ़ता जाएगा.....
प्रेम बाँटो प्रेम ..... ।।
ज्ञान बाँटो ज्ञान बढ़ता जाएगा।
सेवा तन से करो, तो मिलेगा ईश्वर।।''